❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।

ऋग्वेद 1/164/46

एक ही ईश्वर को विद्वान् लोग अनेक नामों से कहते हैं, पुकारते हैं।
The wise men invoke the one God by different names.

वर्ष 42, अंक 3 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 3 दिसम्बर, 2018 से रविवार 9 दिसम्बर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-28 अक्तूबर, 2018

लाखों आर्यजनों की उपस्थिति से सराबोर रहा अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन

केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह जी की उपस्थिति में भव्य समापन समारोह

सम्मेलन के विभिन्न सत्र-सम्मेलनों में अतिथियों द्वारा दिए गए उद्बोधनों के मुख्य अंश

भारतीय संस्कृति एवं एकजुटता ही भारत की ताकत है

- राजनाथ सिंह, गृहमंत्री

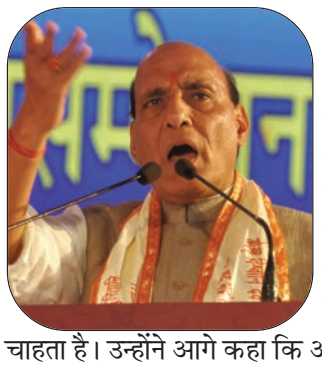

अंतिम और समापन दिवस पर देश के गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी की गरिमामयी उपस्थिति से समापन दिवस और सत्र शोभायमान हो गया। उन्होंने सभी आयोजकों तथा आर्यजनों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति एवं एकजुटता ही भारत की ताकत है। भारत केवल अपने लिए ताकतवर नहीं बनना चाहता बल्कि विश्व के पूरे मानव समाज के कल्याण के लिए ताकतवर बनाना चाहता है। उन्होंने आगे कहा कि आर्य समाज के इस सम्मेलन में अनुशासन और शान्ति है, यह केवल संस्था नहीं बल्कि क्रांतिकारी विचार है जो सोए हुए आदमी को भी जगा दे। हम तो आर्य हैं और पूरे विश्व को आर्य बनाना चाहते हैं।

गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने अपने सम्बोधन में आगे कहा कि महर्षि दयानंद जी का हृदय जितना बड़ा था, कल्पना नहीं की जा सकती। उन्हें अपनी चिंता नहीं थी बल्कि उनका मन दूसरों की चिंता में हमेशा लगा रहता था। वसुधैव कुटुंबकम के संदेश को छोटे मन वाला आदमी नहीं दे सकता बल्कि बड़े मन वाला ही ऐसा कर सकता है। यही तो भारत की सांस्कृतिक की पहचान है। वृक्ष न काटना, बेटियों को पढ़ाना ये हमारे देश की संस्कृति है। महर्षि दयानंद जी काफी दूरदर्शी थे, उन्हें पता चल गया था कि आगे क्या होने वाला है। जो कुछ भी ज्ञान हमारे वेदों में है वह दुनिया के पास नहीं है। भारत की संस्कृति स्वयं में आधुनिक है और इसे आधुनिकता की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने आश्वासन दिलाते हुए कहा कि मैं मोदी जी से बात करूंगा और मुझे विश्वास है कि वे इस चीज में अपनी सहमति देंगे कि 2024 में जो अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन होगा, उसमें दयानंद सरस्वती जी की जन्म शताब्दी पूरे विश्व में मनाई जाए।

भारत में शिक्षा की कमी को सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने महसूस किया- प्रो. जगदीश मुखी, राज्यपाल आसाम

अपनी गरिमामयी उपस्थिति से मंच को संबोधित करते हुए आसाम के राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी ने कहा कि देश के युवा आर्य समाज से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें। उन्होंने लोगों को आर्य समाज के योगदान को स्मरण कराते हुए कहा कि देश में शिक्षा की कमी को सर्वप्रथम स्वामी दयानंद सरस्वती जी महसूस किया।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अभूतपूर्व सफलता पर
समस्त कार्यकर्ताओं का स्वागत एवं सम्मान समारोह
16 दिसम्बर, 2018 ★ यज्ञ : 3 बजे ★ सम्मान समारोह : 3:30 से 7 बजे
एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग पश्चिम, नई दिल्ली-26
समस्त समितियों के माननीय अध्यक्ष एवं संयोजक महानुभावों से निवेदन है कि अपनी समिति के सभी कार्यकर्ताओं को सूचित करें एवं भारी संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।
कार्यक्रम में सम्मेलन के विभिन्न फोटोग्राफ एवं वीडियो भी दिखाए जाएगें।
निवेदक धर्मपाल आर्य, प्रधान; विनय आर्य, महामन्त्री — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
महाशय धर्मपाल, प्रधान; सतीश चड्डा, महामन्त्री — आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली
कृपया समारोह के उपरान्त प्रीतिभोज अवश्य ग्रहण करें

देश की आजादी में आर्यसमाज का बलिदान हमेशा याद रखा जायेगा - आचार्य डॉ. देवव्रत, राज्यपाल हि.प्र.

अफ्रीकी बच्चों द्वारा मंच पर यज्ञ के आयोजन को देखते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य डॉ. देवव्रत ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज देश का प्राण है। देश की आजादी में आर्य समाज का बलिदान हमेशा याद रखा जायेगा। मंच पर पधारे वरिष्ठ भाजपा नेता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि वेदों की जो विचारधारा है वही आर्य समाज की विचारधारा है जिसे आर्य समाज ने अपनी कथनी करनी में धारण किया है।

महर्षि दयानन्द जैसा व्यक्तित्व पूरे विश्व में नहीं हो सकता

- गंगा प्रसाद चौरसिया, राज्यपाल सिक्किम

सिक्किम के राज्यपाल गंगा प्रसाद चौरसिया ने कहा कि उन्होंने इस महासम्मलेन में शामिल पाकिस्तान के आर्य प्रतिनिधिमंडल के लिए गृहमंत्री द्वारा वीजा दिलाने में मदद करने के लिए खुशी जताई । जबकि केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह ने कहा कि दयानंद जैसा व्यक्तित्व पूरे विश्व में नहीं हो सकता। यदि हम लोगों को गृहमंत्री राजनाथ सिंह का साथ मिलता रहा तो हम पूरे विश्व में आर्य संस्कृति का डंका बजा सकते हैं।

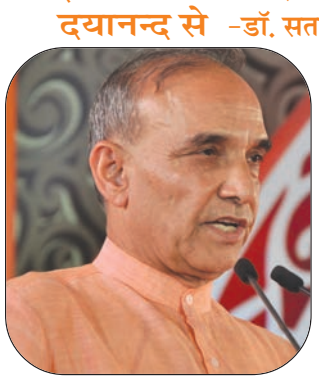

जातिविहीन समाज के निर्माण का श्रेय यदि किसी को जाता है तो आर्य समाज को जाता है -योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उ. प्रदेश

योगी आदित्यनाथ ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वदेशी का आन्दोलन सबसे पहले आर्य समाज ने चलाया था। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में स्वदेशी राजा का होना ही अनिवार्य माना है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज को इस देश में अनेको श्रेय जाते हैं जिनका वर्णन अल्प समय में नहीं हो सकता। एक जातिविहीन समाज के निर्माण का श्रेय यदि किसी को जाता है तो आर्य समाज को जाता है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि उत्तर प्रदेश में कब्जा की गई आर्य समाज की सम्पत्ति को वापस लाने का कार्य किया जाएगा।

पराई पीर में जलना, मरीजों की दवा होना अरे कोई जाने दयानन्द से -डॉ. सतपाल सिंह, मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री

कार्यक्रम की अन्य गरिमामयी उपस्थितियों में केंद्रीय राज्यमंत्री डॉ. सतपाल सिंह ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ अपना वक्तव्य आरंभ किया जिसके अंत में उन्होंने महर्षि दयानंद के संदर्भ में एक कविता-'पराई पीर में जलना, मरीजों की दवा होना अरे कोई जाने दयानंद से, धर्म पै जां फिदा होना धर्म पै जां फिदा होना' कविता के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की।

- शेष पृष्ठ 4-5-6-8 पर

वेद-स्वाध्याय

परमात्मा का स्वरूप

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। -यजुः. 40/8
ऋषिः दीर्घतमाः।। देवता - आत्मा।। छन्दः स्वराड्जगती।।

शब्दार्थ - सः = वह परमेश्वर **शुक्रम्** = दीप्यमान रूप से **अकायम्** = शरीररहित होकर **अव्रणम् अस्नाविरम्** = व्रण-रहित और स्नायु-रहित होकर **शुद्धम्** = सर्वथा शुद्ध और **अपापविद्धम्** = पाप से भी सर्वथा अछूता होकर **परि अगात्** = सर्वत्र फैला हुआ है, सब ओर व्यापा हुआ है। वह **कविः** = क्रान्तदर्शी **मनीषी** = सबके मनों का स्वामी **परिभूः** = सबका परिभव करनेवाला, सबसे ऊंचा और **स्वयंभूः** = स्वयं विद्यमान अजन्मा परमेश्वर **शाश्वतीभ्यः समाभ्यः** = अपनी सनातन प्रजाओं के लिए (शाश्वत काल से) **अर्थान्** = सब अर्थों को (वेदज्ञान, ऐश्वर्य, कर्मफल आदि सब पदार्थों को) **याथा तथ्यतः** = ठीक-ठीक, यथावत्, पूर्ण न्याय से **व्यदधात्** = विधान करता है, रचता है, देता है।

विनय - वह परमेश्वर तो सर्वत्र फैला हुआ है। वह अपने दीप्यमान शुक्र रूप में, सब प्रकार के शरीरों से रहित होकर, अतएव शारीरिक व्रणादि दोषों तथा स्नायु आदि बन्धनों से रहित होकर, सर्वथा शुद्ध, सूक्ष्म मल-रूप पापों से भी सर्वथा रहित, त्रिकाल में सदा-सर्वदा मुक्तरूप होकर सर्वत्र फैला हुआ है, सर्वत्र रमा हुआ है। एवं, सर्वव्यापक, सर्वगत होकर वह परमेश्वर इस सब जगत् को चला रहा है, इसकी ठीक-ठीक परिपूर्ण व्यवस्था कर रहा है। शाश्वत काल से वह अपनी सनातन प्रजा के लिए, प्राणिमात्र के लिए, सब अर्थों को रच रहा है; ज्ञान, ऐश्वर्य, कर्मभोग्र आदि सब उपहारों को यथावत् परिपूर्ण न्याय से सबको दे रहा है और शाश्वत काल तक देता रहेगा, क्योंकि वह क्रान्तदर्शी, कवि, सर्वज्ञ है, सबके मनों को जानने और प्रेरणेवाला मनीषी है, सब वस्तुओं का परिभव करने वाला, सर्वत्र सबसे ऊंचा परिभू है और स्वयमेव विद्यमान स्वाधार, आत्माश्रय, अजन्मा, स्वयंभू है। यही हमारे परम ईश्वर का स्वरूप है। हे मनुष्यो! इस स्वरूप को अपने हृदयों में बसा लो, अपने अन्तःकरण में रमा लो।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सिखों पर मेहरबान क्यों हुआ इमरान?

....खुफियां एजेंसियों की आशंका है कि इस गलियारे का उपयोग करते हुए खालिस्तान समर्थक पंजाब के युवाओं को उग्रवाद के लिए उकसा सकते हैं। ड्रग्स समेत अन्य मादक पदार्थों को भी इस रास्ते भारत में पहुँचाने का कार्य किया जा सकता है। इस कारण गलियारे को हल्के में नहीं लेना चाहिए।

जो लोग आज इस गलियारे को इमरान खान की दोस्ती का बड़ा नजराना समझ रहे हैं उन्हें स्मरण कर लेना चाहिए कि सन् 1999 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा इसी अमन की आशा में लाहौर के लिए सदा-ए-सरहद बस यात्रा शुरू की थी और अपने पाकिस्तानी समकक्ष नवाज शरीफ को गले लगाकर दुनिया को शांति का सन्देश दिया था, किन्तु बदले में भारत को क्या मिला! कारगिल युद्ध .....

भारत इतिहास केवल अतीत के रक्तपात पर नहीं रोता बल्कि कई बार अतीत में हुई गलतियों और भूलों पर भी पश्चाताप करता है, यदि समय पर कर लेता है तो नया इतिहास लिखा जाता है वरना उसी इतिहास में गलतियों के कुछ और सबक के टुकड़े जुड़ जाते हैं। गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा था कि 'बांह पर तेल लगाकर उसे तिल से भरे बोरे में डालो। जितने तिल आपकी बांह पर चिपक जायेंगे अगर कोई मुसलमान उतनी कसमें भी खा ले तो भी उस पर विश्वास नहीं करना।' लेकिन समय के साथ गुरु का कथन धूमिल होता दिख रहा है और 26 नवम्बर को भारत द्वारा गुरदासपुर में डेरा बाबा नानक में करतारपुर गलियारे की आधारशिला रख दी गयी। इस गलियारे के खुलने से इसे पाकिस्तान का सिखों के लिये इमरान की ओर से उपहार समझा जा रहा है।

केंद्र सरकार द्वारा गत 22 नवंबर को हुई केबिनेट बैठक में करतारपुर गलियारा बनाने को मंजूरी दे दी थी। इससे पाकिस्तान में सिखों की आस्था से जुड़े ऐतिहासिक गुरुद्वारा दरबार साहिब को भारत के सीमावर्ती जिले गुरदासपुर से जोड़ने की सिख समुदाय की मांग पूरी होती दिख रही है। दोनों देशों ने अपने-अपने क्षेत्रों में गलियारा बनाने की घोषणा की है। गुरुद्वारा दरबार साहिब करतारपुर पाकिस्तान के जिला नारोवाल में है यह गुरुद्वारा भारत की सीमा से करीब 3 किलोमीटर दूर है। भारत सरकार ने भारतीय सीमा के नजदीक एक बड़ा टेलिस्कोप लगाया है जिसके जरिए तीर्थयात्री करतारपुर गुरुद्वारे के दर्शन करते आये हैं। यदि गुरु गोविन्द सिंह के उपरोक्त वचनों को भुला दिया जाये तो यह वाकई में यह स्वागत योग्य कदम हैं। कारण! सिखों की आस्था पवित्र गुरुद्वारा दरबार साहिब से जुड़ी है और देश की भावना सिखों के साथ।

पर अचानक ये सब क्यों हुआ यह संशय मन में प्रश्न जरूर खड़े कर रहा है क्योंकि वर्ष 1998 से भारत लगातार यह मांग करता चला आ रहा था कि गलियारे को खोल दिया जाये लेकिन पाकिस्तान अपने इंकार पर डटा रहा। क्या अब इसे खालिस्तान की भारत विरोधी नीति रेफरेंडम 2020 का हिस्सा कहा जाये? क्योंकि जिस समय पाकिस्तान में गलियारे का शिलान्यास हो रहा था उस समय वहां खालिस्तानी नेता गोपाल सिंह चावला की उपस्थिति इस शंका को बल प्रदान कर रही है। जिस तरह आज खालिस्तान समर्थक समूह दुनिया के कई देशों में अपनी भारत विरोधी गतिविधियां चला रहे हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, कनाडा सहित कई देशों में चल रही गतिविधियों के साथ-साथ कुछ महीने पहले ब्रिटेन में खालिस्तान की मांग को लेकर जनमत संग्रह के पक्ष में प्रदर्शन भी किया गया था।

सन् 1971 में पाकिस्तान के दो हिस्से होने के बाद वहां की खुफियां एजेंसी आईएसआई ने बदला लेने के लिए भारतीय पंजाब को किस तरह अलगाववाद और आतंक की भट्टी में झोंक दिया था शायद यह कोई भूलने वाली बात नहीं हैं क्योंकि 80 के दशक का इतिहास आज भी आंसू में लिपटा दिखाई दे जाता है। बहरहाल देश से प्रेम करने वाले अधिसंख्य पंजाब के लोग आगे बढ़े और सीमापार बैठे दुश्मन के इरादों पर पानी फेर दिया। आतंकी बीमारी से पंजाब मुक्त हो गया किन्तु यह बात हमें नहीं भूलनी चाहिए कि पाकिस्तान में अभी भी खालिस्तान समर्थकों की तादाद काफी ज्यादा है और उन्हें पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई का समर्थन भी हासिल है। ऐसे में भारतीय खुफियां एजेंसियों की आशंका है कि इस गलियारे का उपयोग करते हुए खालिस्तान समर्थक पंजाब के युवाओं को उग्रवाद के लिए उकसा सकते हैं। ड्रग्स समेत अन्य मादक पदार्थों को भी इस रास्ते भारत में पहुँचाने का कार्य किया जा सकता है। इस कारण गलियारे को हल्के में नहीं लेना चाहिए।

जो लोग आज इस गलियारे को इमरान खान की दोस्ती का बड़ा नजराना समझ रहे हैं उन्हें स्मरण कर लेना चाहिए कि सन् 1999 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा इसी अमन की आशा में लाहौर के लिए सदा-ए-सरहद बस यात्रा शुरू की थी और अपने पाकिस्तानी समकक्ष नवाज शरीफ को गले लगाकर दुनिया को शांति का सन्देश दिया था, किन्तु बदले में भारत को क्या मिला! कारगिल युद्ध जिसमें हमारे सैंकड़ों सैनिकों ने बलिदान देकर अपनी ही भूमि दुश्मन से मुक्त करानी पड़ी थी। हमें समझना होगा कि सीमा पार राजनितिक सत्ता पर बैठा प्रधानमंत्री इमरान खान सिर्फ एक मोहरा भर है। पाकिस्तान की असल सत्ता और नीति निर्धारण वहां की सेना और आईएसआई करती हैं। वहां सत्ताओं पर चेहरे बदलते हैं लेकिन नीति हमेशा से भारत को जख्म देने की रही है। ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि पाकिस्तान में अभी तक जितने नेता या तानाशाह सत्ता के शीर्ष तक पहुंचे किसी एक को पाकिस्तान के सभी संस्थानों का उतना समर्थन प्राप्त नहीं रहा जितना इमरान खान को प्राप्त है। इमरान खान के चुनाव में जिस तरह पाकिस्तानी सेना, आईएसआई, कट्टरपंथी मुल्ला-मौलवियों की जमाते और पाकिस्तानी आवाम इमरान का समर्थन कर उसे सत्ता की कुर्सी तक पहुँचाया इससे ध्यान रखना चाहिए कि इमरान इनमें से किसी एक को निराश नहीं करना चाहेंगे।

गलियारे का शिलान्यास हो गया है कुछ समय पश्चात् यह रास्ता बनकर भी तैयार हो जायेगा। सिखों की आस्था को कोटि-कोटि प्रणाम और शुभकामनायें। किन्तु हमें गुरु गोविन्द के कथन के साथ इतिहास के ये सबक भी याद रखने होंगे कि बरसों पहले भाई मतिदास को आरे से किसके द्वारा चिरवाया गया था। किसने भाई दयालदास को खौलते पानी में डाला था। नहीं भूलना चाहिए कि गुरू तेग बहादुर औरंगजेब के सामने नहीं झुके तो शीश उतार लिया गया और इसके बाद भाई सतीदास के बदन पर रूई लपेट कर आग लगा दी गई थी कारण इन सब सिख बहादुर वीरों, गुरुओं ने मुगलों की मित्रता को स्वीकार नहीं किया था। - ***सम्पादकीय***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 135वां निर्वाण दिवस समारोह सम्पन्न

ऋषि निर्वाण पर वह दीप जलाएं जिससे जगत का अंधेरा मिट जाए – इन्द्रगंगा विशुन आर्य, सूरीनाम

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में सहयोगी समस्त संस्थाओं का हार्दिक धन्यवाद – महाशय धर्मपाल

7 नवम्बर 2018 को नई दिल्ली के रामलीला मैदान में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में आयोजित महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 135 वें निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह प्रात: 8:30 बजे यज्ञ से आरम्भ हुआ जिसकी ब्रह्मा आचार्य कल्पना आर्य जी के नेतृत्व में, आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की बालिकाओं ने वेद पाठ किया, श्रीमती अन्जू व श्री प्रदीप गुप्ता जी, श्रीमती अन्जू व श्री वीरेन्द्र आर्य जी, श्रीमती विभा व श्री हर्ष प्रिय आर्य जी, श्रीमती शशी व श्री देवेन्द्र आर्य जी, श्रीमती सुनीता व श्री बलदेव सचदेवा जी, श्रीमती ममता व श्री अशोक महतानी जी, श्रीमती अनुराधा व श्री अश्वनी आर्य जी, श्रीमती जमुना देवी व श्री सुखबीर सिंह जी यजमान बने। उपरोक्त यजमान

उत्साह के साथ भाग लिया, वहीं दूसरी ओर महर्षि देव दयानन्द के नारी सशक्तिकरण को धरातल रूप देते हुए आचार्य आयुषी आर्य ने बहुत ही ओजस्वी उद्बोधन दिया। यह सारा कार्यक्रम महर्षि देव दयानन्द के आह्वान कि ''नारी सशक्त

श्री योगेश मुंजाल चेयरमैन मुंजाल शोवा ने अपने उद्बोधन में महासम्मेलन की सफलता के लिए सभी को बधाई देते हुए समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों से आह्वान किया कि ''वे आगे आएं जिससे सम्मेलन में लिए गए

समारोह को सम्बोधित करते स्वामी सुधानन्द जी, श्री योगेश मुंजाल जी, श्री इन्द्रगंगा बिशुन सिंह जी, श्रीमती उषाकिरण आर्या जी एवं श्री कीर्ति शर्मा जी। (नीचे)स्वामी कमलानन्द जी को सम्मानित करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं स्वामी सुधानन्द जी। इस अवसर पर उपस्थित आर्यजन

वे आर्यजन हैं जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 में अपने-अपने विभागों का कार्य दिनरात एककर बखूबी निभाया जिससे महासम्मेलन सफलता की ऊंचाईयों को छू सका और ये भी तभी सम्भव हो सका जबकि उनकी धर्मपत्नियों ने समर्पण भाव से उनका साथ निभाया। इन सबके सम्मान हेतु ही इनसे निवेदन कर यजमान बनाया गया। तदुपरान्त श्री सुरेन्द्र गुप्ता, श्री सुरिन्द्र चौधरी व श्री अरुण वर्मा अपनी ध र्मपत्नियों सहित सम्मिलित रूप से ध्वजारोहण किया। इन महानुभावों व इनके परिवारों ने भी बड़ी लगन, परिश्रम व समर्पण भाव से अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन को सफल बनाने में विशेष योगदान दिया। आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की बालिकाओं ने श्रीमती प्रगति आर्य और आर्य समाज पंखा रोड सी-3 जनकपुरी के बालकों ने श्रीमती प्रतिभा कटारिया के नेतृत्व में ईश्वर भक्ति के भजन सुनाए व मंत्र गायन किया। बर्मा से आये आर्यजनों में से श्रीमती दीपा दास व उनकी सहयोगियों ने भजन प्रस्तुत किये।

एक तरफ मंच संचालन श्रीमती उषा किरण कथूरिया जी कर रही थीं कि 32 देशों से आये आर्यबन्धुओं में से 28 देशों से नारियों ने भी इस महासम्मेलन में बड़े तो समाज सशक्त है'' को प्रमाणित करते हुए कहा ''जिनके माथे पर न बिंदिया थी न पैरों में पायल उनकी मांगों को सजाया महर्षि दयानन्द ने''। सूरीनाम से पधारे श्री गंगा इन्द्र विशन सिंह जी ने कहा ''आज वह दीप जलाएं जिससे जगत का अंधेरा मिट जाए।'' मंच की शोभा चेकोस्लोवाकिया से आये संन्यासी कमला नन्द जी बढ़ा रहे थे।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के विभिन्न बिन्दुओं पर श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रकाश डाला। श्री कीर्ति शर्मा, संयोजक विदेशी अतिथि समिति ने आर्य महासम्मेलन में हुए अपने अनुभवों को साझा किया तथा अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ में सहयोगी श्रीमती सुषमा चावला, श्रीमती भारती, श्रीमती गीता व श्री ओजस्वी के किये विशेष सहयोग के लिए उन्हें सम्मानित किया।

निर्णायों और योजनाओं को आगे बढ़ाया जा सके।''

श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने विभिन्न आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं तथा दिन-रात एक करने वाले सभी आर्यजनों का धन्यवाद दिया, उनके किये कार्यों को सराहा तथा बहुत ही विस्तार से महासम्मेलन की उपलब्धियों का विवेचन करते हुए बताया कि

1. प्रतिभा विकास योजना - प्रशासनिक सेवाओं में योगदान के लिए 12 नौजवानों को जिसमें 6 युवक एवं 6 युवतियों का चयन किया गया है उनकी शिक्षा व आने-जाने, रहने-खाने की व्यवस्था श्री योगेश मुंजाल जी व श्री सत्यानन्द जी के सहयोग से की जाएगी।

2. श्री ठुकराल जी के सहयोग से महाशय धर्मपाल मीडिया सेन्टर की स्थापना हो चुकी है।

3. वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प का कार्य शुरू हो गया है जिसके लिए 25 देशों में जाने के लिए महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचार मण्डल की स्थापना की जा चुकी है।

4. शिक्षा क्रांति अभियान के लिए भी कार्य आरम्भ हो चुका है जिसके लिए विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों में जहां स्कूल विद्यालयों का अभाव है वहां नये शिक्षा केन्द्रों की स्थापना महाशय जी द्वारा की जाएगी।

श्री विनय आर्य जी ने कहा कि वास्तव में महासम्मेलन में कार्यकरने वाले किसी भी कार्यकर्त्ता ने सम्मेलन को देखा ही नहीं क्योंकि वे सब अपनी-अपनी जिम्मेदारियों और दायित्वों को निभाने में पूर्णरूप से समर्पित थे इस हेतु दिल्ली के अलग-अलग क्षेत्रों में समारोह आयोजित करके सभी आर्य पदाधिकारियों/कार्यकत्ताओं को सम्मेलन की क्लिपिंग दिखाई जाएगी व उन्हें सम्मानित करने की योजना सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा करने का निर्णय लिया गया है।

कार्यक्रम के अन्त में सतीश चड्ढा, महामंत्री ने अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की सफलता पर सभी को सांझी बधाईयां दी क्योंकि इस महासम्मेलन पर सभी ने कहीं थोड़ा कहीं ज्यादा अपनी तरफ से पूरा सहयोग दिया, अत: सांझे सहयोग की सांझी बधाईयां बाटीं । भामाशाह दानवीर महाशय धर्मपाल जी के वरदहस्त के नीचे, दो आर्य रत्नों, श्री धर्मपाल आर्य और श्री विनय आर्य को पगड़ी व शाल ओढ़ाकर 'आर्य रत्न' से सम्मानित किया जिसका पूरे पंडाल में उपस्थित आर्यजनों ने जोरदार तालियों के साथ समर्थन किया।

- सतीश चड्ढा, महामंत्री

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : 25-28 अक्तूबर, 2018 दिल्ली

आर्य संन्यासी एवं वैदिक विद्वानों के आशीर्वाद-प्रवचनों से मिली एक नई दिशा व उत्साह

स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती

स्वामी सूर्यदेव जी (पंजाब)

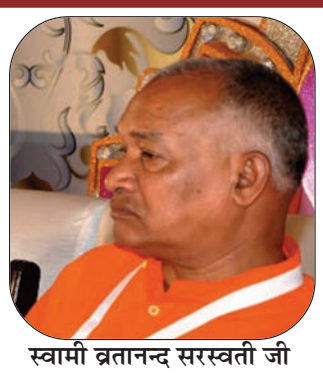
स्वामी व्रतानन्द सरस्वती जी

साध्वी पुष्पा शास्त्री जी

साध्वी देवप्रिया जी

स्वामी चन्द्रदेव जी

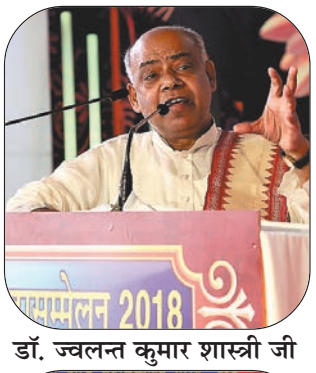

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी

आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जी

डॉ. वेदपाल जी

आचार्या सुमेधा जी

आचार्य अखिलेश्वर जी

डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री जी

श्री राकेश शर्मा जी (अन्तरिक्ष यात्री)

डॉ. धीमान जी

आचार्य दुलालचन्द शास्त्री जी

आचार्य जयेन्द्र शास्त्री जी

डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री जी

आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी

डॉ. आनन्द कुमार जी

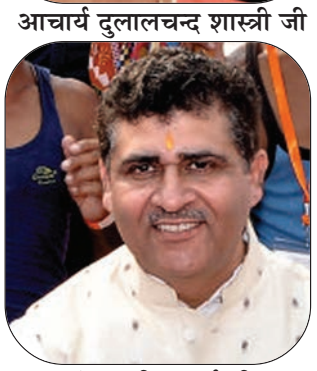
डॉ. जयदीप आर्य जी

श्री सारस्वत मोहन मनीषी जी

श्री देव शर्मा जी

आचार्या नन्दिता शास्त्री जी

आचार्य सन्तोष शास्त्री जी

आचार्य जीववर्धन शास्त्री

श्री सुरेश के. चव्हान जी

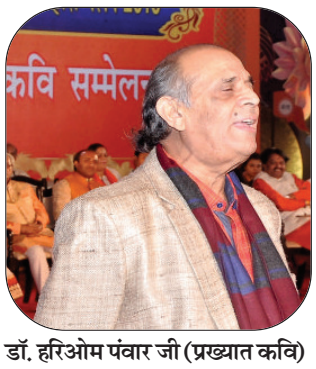
डॉ. हरिओम पंवार जी (प्रख्यात कवि)

डॉ. सत्यकाम जी

आचार्य योगेश जी

डॉ. उमा शशि दुर्गा जी

विशेष नोट : उपरोक्त प्रकाशित चित्र अन्तिम नहीं हैं। महासम्मेलन में अपना आशीर्वाद, उद्बोधन, मार्गदर्शन, भक्ति संगीत प्रस्तुत करने वाले आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, भजनोपदेशकों, अतिथियों, व्यवस्थापकों, संयोजकों, कार्यकर्ताओं के चित्र आर्यसन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किए जाएंगे। - सम्पादक

श्रीमद्यानन्द वेदार्ष महाविद्यालय का 85वां वार्षिकोत्सव

श्रीमद्यानन्द वेदार्ष महाविद्यालय 119, गौतम नगर नई दिल्ली का 85वां वार्षिकोत्सव एवं 39वां चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ 3 से 16 दिसम्बर 2018 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर शास्त्र स्मरण प्रतियोगिता सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन एवं कवि सम्मेलन भी आयोजित होंगे। यज्ञ ब्रह्मा डॉ. महावीर होगें तथा प्रवचन डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री जी करेंगे। - ***के. रुद्रसेन आर्य, मन्त्री***

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : 25-28 अक्तूबर, 2018 दिल्ली

महासम्मेलन सफल बनाने में प्रेरक बने हमारे राजनेता एवं विशिष्ट सहयोगी महानुभाव

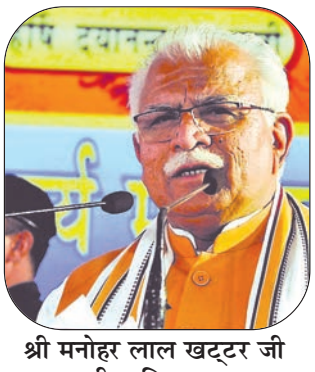
श्री मनोहर लाल खट्टर जी
मुख्यमन्त्री, हरियाणा सरकार

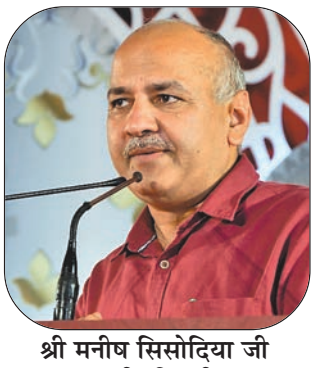
श्री मनीष सिसोदिया जी
उपमुख्यमन्त्री, दिल्ली सरकार

डॉ. हर्षवर्धन जी
केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री

श्री सुधांशु त्रिवेदी जी
राष्ट्रीय प्रवक्ता, भाजपा

श्री विजय गोयल जी
केन्द्रीय मन्त्री, भारत सरकार

श्री सुदर्शन भगत जी
राज्य मन्त्री, भारत सरकार

कैप्टन अभिमन्यु जी
मन्त्री, हरियाणा सरकार

श्री मनोज तिवारी जी
संसद सदस्य

श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी
संसद सदस्य

साध्वी प्राची जी
संसद सदस्य

श्री महेश गिरी जी
संसद सदस्य

श्री धर्मबन्धु जी
गुजरात

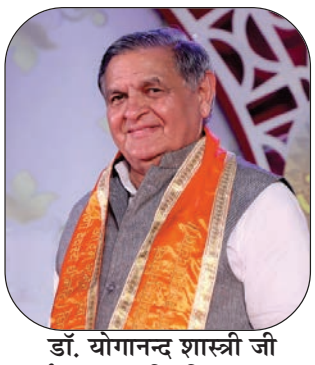
डॉ. योगानन्द शास्त्री जी
पूर्व अध्यक्ष, दि. विधान सभा

डॉ. रासा सिंह रावत जी
पूर्व संसद सदस्य

श्री विजेन्द्र गुप्ता जी
नेता प्रतिप्रक्ष, दि. विधान सभा

श्री बृजेश रावत जी
विधायक, देवबन्द

श्री सुभाष आर्य जी
पूर्व महापौर, दक्षिण दिल्ली

श्री सत्यवीर शास्त्री जी
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

श्री योगेश आत्रेय जी
भाजपा नेता, दिल्ली

डॉ. रमाकान्त गोस्वामी जी
पूर्व मन्त्री, दिल्ली सरकार

प्रान्तीय सभाओं एवं संस्थाओं के माननीय अधिकारी जिनका मिला अथक सहयोग

डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी
का.प्रधान, परोपकारिणी सभा

श्री उमेद शर्मा जी
मन्त्री, आर्य प्र. सभा हरियाणा

श्री अरुण अबरोल जी
मन्त्री, आर्य प्र. सभा मुम्बई

श्री जगदीश प्र. केड़िया जी
मन्त्री, आर्य प्र. सभा बंगाल

प्रो. स्वतन्त्र कुमार जी
पूर्व मन्त्री, आर्य प्र. सभा पंजाब

श्री देवेन्द पाल वर्मा जी
आर्य नेता, आर्य प्र. सभा उ.प्र.

श्री वाचोनिधि आर्य जी
उपमन्त्री, सार्वदेशिक सभा

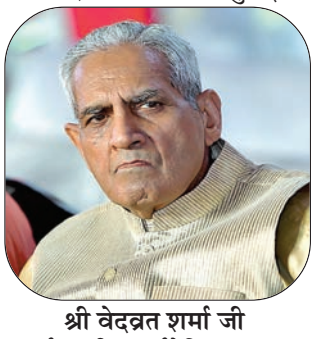
श्री वेदव्रत शर्मा जी
पूर्व मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

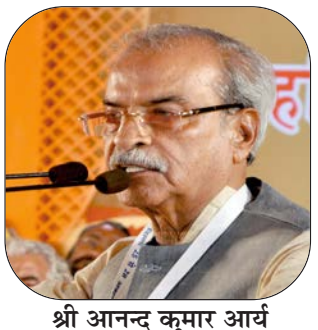
श्री आनन्द कुमार आर्य
पूर्व प्रधान, आर्य प्र. सभा बंगाल

वैद्य इन्द्रदेव जी
पूर्व महामन्त्री, दिल्ली आ.प्र. सभा

आपकी प्रतिक्रिया

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली – 2018 : जैसा मैंने देखा

अद्‌भुत, अकल्पनीय, अभूतपूर्व, दर्शनीय, आकर्षक, प्रेरक अंतर्राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलन दिल्ली 2018, चार दिवसीय आर्यों के महाकुम्भ के रूप में आर्यसमाज के इतिहास में स्वर्णिम स्मृतियाँ दर्ज कर 28 अक्टूबर 2018 को समाप्त हुआ। दिल्ली से लौटे तीन दिन हो गए परन्तु हर क्षण ऐसा लगता है कि अभी भी समारोह में ही हैं ऐसी गहरी छाप इस ऐतिहासिक महोत्सव ने छोड़ी है।

मैंने सुना था कि दिल्ली का वायुमंडल जहरीला हो गया है परन्तु स्वर्ण जयन्ती पार्क रोहिणी, दिल्ली में किसी भी क्षण ऐसा नहीं लगा। क्या यह वहां विशाल भव्य यज्ञशाला के अन्दर संपन्न हो रहे प्रातःकालीन एवं सायंकालीन यज्ञ एवं एक छोटी यज्ञशाला में निरंतर चल रहे प्रशिक्षण यज्ञ का प्रभाव था? यह विचारणीय है। अगर ऐसा है तो दिल्ली एवं राष्ट्र को यह आर्यसमाज और ऋषि दयानंद की अनुपम देन होगी, जैसा कि महर्षि दयानन्द ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में अग्निहोत्र से पर्यावरण कि शुद्धि के सन्दर्भ में स्पष्ट लिखा है।

सम्मलेन का आरम्भ तो 25 अक्टूबर 2018 से होना था परन्तु जब मैं 24 तारीख को प्रातः 11 बजे के लगभग मेला स्थल पर पहुंचा तो आश्चर्य था कि प्रवेशार्थियों की लम्बी-लम्बी पंक्तियाँ लगी हुई थीं और चेहरे पर थकान और क्लांत शरीर, परन्तु उत्साह उमंग से ओतप्रोत इन आर्य नर-नारियों की संख्या 26 की शाम तक बढ़ती ही गयी। मुझसे अनेक उत्सुक आर्यों ने बार-बार पूछा कि संभागियों की कुल संख्या क्या होगी। पर जब भी इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करता, मेरी आँखों के समक्ष खचाखच भरा पांडाल, पांडाल के चारों ओर खड़ी हुयी जन मेदिनी, पांडाल के बाहर जहां नजर डालो आते-जाते आर्य-जन, भोजन शाला के अन्दर-बाहर अपार भीड़, पुस्तक मेला, प्राइवेट भोजनस्थल, 19 विभिन्न सभागारों में चलते कार्यक्रमों में सर्वत्र, आर्यजनों की भारी उपस्थिति किसी भी आकलन को संशयात्मक बना देने में सक्षम थी। अतः आज तक मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाया।

व्यवस्थाओं तथा व्यवस्थापकों की कुशलता और पुरुषार्थ को सराहे बिना कोई रह नहीं सकता ऐसा मुझे विशवास है। पंजीकरण, आवास व्यवस्था, अमानती सामानघर, सभा के विभिन्न अस्थायी कार्यालयों में काम करते कार्यकर्ताओं ने 28 की सायं से पूर्व थकान कहते किसे हैं इसकी अनुभूति भी नहीं की। भोजनशाला में भारी भीड़ तो स्वाभाविक थी ही परन्तु सुव्यवस्था, चपाती बनाने के लिए लगायी गयी मशीन, भोजन लेने तथा खाने के लिए पृथक-पृथक स्थान की व्यवस्था तथा भोजन झूठा न छोड़ने की सतत प्रार्थना एवं अन्य निर्देशों एवं सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं व आर्यवीरों के परिश्रम ने भोजन व्यवस्था यथासंभव सहज व सुचारु बना दिया था। मैंने यद्यपि प्रथम दिन ही वहां भोजन किया था पर अन्यों ने भी मेरे इस विचार की पुष्टि की कि गुणवता पर भी भोजन खरा उतर रहा था। इसके अतिरिक्त फलों के स्टाल, चाट-स्टालों, आइसक्रीम स्टाल एवं बी.टी,डब्ल्यू जैसे प्रसिद्ध ब्रांड द्वारा संचालित भोजन शाला ने उन लोगों के लिए खाना-पीना सहज बना दिया था जो पंक्ति में लगना या तो पसंद नहीं करते थे अथवा उनके पास समायाभाव था। 5 रुपये में मिनिरल पानी, तथा निःशुल्क शुद्ध पेय जल की उपलब्धता दिन की गरमी में सबसे बड़ी राहत थी। एक विचित्र कार्य और हुआ।

पूज्य स्वामी रामदेव जी ने इस समारोह में आकर इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने पतंजलि के स्टाल से पानी, दूध ,छाछ, तथा जलेबी सभी मुफ्त उपलब्ध कराने की घोषणा कर दी। पुस्तक बाजार में पतंजलि के स्टाल पर लम्बी-लम्बी पंक्तियाँ समारोह के समापन तक लगी रहीं। एक बात मुझे थोड़ी खटकी जिसका उल्लेख भी मुझे कर देना चाहिए या तो मेरी जानकारी में नहीं आयी या वास्तव में यह कमी रही (मेरी दृष्टि में) कि सेन्यासियों, वानप्रस्थियों, विद्वानों व गणमान्य अतिथियों के लिए भोजन करने के लिए कोई पृथक व्यवस्था नहीं थी। हमारे 28 देशों से पधारे सैंकड़ों विदेशी अतिथियों के लिए जो आलीशान वातानुकूलित विशाल डोम बनाया था और उनके लिए स्टेज के पीछे जिस प्रकार की फाइव स्टार व्यवस्था थी वह तो संभवतः आर्यसमाज के उत्सवों के इतिहास में प्रथम बार ही देखी गयी थी, निःसंदेह स्तुत्य थी पर ऐसी ही व्यवस्था ऊपर मेरे द्वारा उल्लिखित वर्ग के लिए भी भोजन करने हेतु होती तो उत्तम होता, ऐसी मेरी राय है। यहाँ मैं पृथक मेन्यू की बात नहीं कर रहा। विदेश के अतिथियों के लिए मेन्यू सर्वथा पृथक तथा भव्य था जो उचित था परन्तु उपरोक्त वर्ग के लिए मेन्यू वही रहता, हां बैठने की व्यवस्था पृथक तथा सुविधाजनक होती तो उत्तम रहता और संभवतः यही कारण है कि ऐसे अतिथियों को मैंने प्रायः बी.टी.डव्ल्यू की भोजनशाला में देखा। जो भी हो इस एक बात को नजरअंदाज कर दें तो सम्पूर्ण व्यवस्था अधिकारियों की उच्च सोच की दिग्दर्शिका रहीं।

यहाँ अगर मैं सुरक्षा व्यवस्था की बात न करूं तो विवरण अधूरा ही रहेगा। उच्चतम कोटि की सुरक्षा व्यवस्था। इतना बड़ा समारोह, और मेरी जानकारी में एक मोबाइल चोर को पकड़ने के अलावा को छोटी सी भी दुर्घटना नहीं हुयी। इसमें दिल्ली पुलिस का भी सराहनीय सहयोग रहा होगा परन्तु सम्पूर्ण श्रेय आर्यवीर दल को जाता है। दिल्ली के अतिरिक्त अन्य प्रान्तों के आर्यवीर व्यवस्था में रहे होंगे परन्तु सभी अंतिम क्षणों तक अपने-अपने दायित्व का मुस्तैदी से पालन करते रहे और नींव के पत्थर की भाँति सफल समारोह की आधारशिला बने। उनके पुरुषार्थ को एवं उनके अधिकारियों को नमन। यहाँ भी एक बात खटकी वह यह कि कुछ आर्यवीर अपेक्षित विनम्रता को धारण न कर सके फलस्वरूप अनेक बार अनेक विशिष्ट आमंत्रित महानुभावों और आर्य विद्वानों ने अपने को अपमानित महसूस किया, इस बिन्दु पर चिंतन किया जाना चाहिए।

सम्मलेन स्थल की प्लानिंग तथा सज्जा मनमोहक और नयनाभिराम थी। अनेक विशिष्ट प्रयोग किये गए थे जो लम्बे समय तक मुझ समेत अनेक आर्यजनों की स्मृति में ताजा रहेंगे। विशाल भव्य प्रवेशद्वार मानो कह रहा था मुझे देखते बस मत रह जाओ अभी अन्दर तो जाओ अनेक चित्ताकर्षक मनोहारी दृश्य आपको देखने हैं और सचमुच ऐसा ही था। भव्य यज्ञ शाला व शान से फहराता ओ३म् ध्वज जहां गर्वानुभूति करा रहे थे वहीं स्वागत में नमस्ते करते हाथ, लेखन में व्यस्त ऋषि, वैदिक वाङ्मय से शोभित चौराहे , आकर्षक विद्युत् सज्जा मानो सम्मोहन का इंद्रजाल प्रस्तुत कर रही थी तो मुख्य स्टेज की संकल्पना व शोभा को कम से कम मेरी लेखनी शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। बस यही लिख सकता हूँ सुन्दर अति सुन्दर । यह संकल्पना किसकी हो सकती है मैं सही अंदाज लगा सकता हूँ परन्तु नाम लिखने से विरत रहूँगा बस प्रभु से यही प्रार्थना करूंगा कि इन सर्वात्मना समर्पित ऋषि के दीवानों को अधिकाधिक शक्ति-भक्ति प्रदान करे और निरामय दीर्घायुष्य भी, ताकि ये आर्य समाज की अधिकाधिक सेवा कर सकें।

यहाँ मैं तीन कार्यक्रमों की बल्कि चार कार्यक्रमों की चर्चा करना आवश्यक समझता हूँ। सर्वप्रथम और सर्वाधिक आकर्षक और प्रेरक ... एक रूप यज्ञ के नाम से 10000 व्यक्तियों द्वारा एक साथ यज्ञ .. क्या दृश्य था जब ''ओम भूर्भुवःस्वः'' के साथ एक साथ 10000 अग्न्याधान हुए। अंधेरे में एक साथ प्रकाश का प्रकटीकरण, पूज्य स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकृष्ण जी तथा आचार्य राजेश जी की उपस्थिति व मन्त्र पाठ के बीच सब कुछ स्वप्निल लग रहा था। हर घर यज्ञ घर-घर यज्ञ का ऋषि-निर्देश अगर सार्थक हो जाय और हम आर्यजन इसे जीवनव्रत बना लें तो फिर बात ही क्या है।

दूसरे क्रम पर आर्यवीर दल द्वारा प्रस्तुत सम्मोहित कर देने वाली प्रस्तुति वर्षों तक याद की जायेगी। तीसरे क्रम पर भव्य लेजर शो की बात करूंगा। पर उस समय मुख्य मंच पर व्यस्त होने के कारण मैं इस अनूठे कार्यक्रम का व्यक्तिगत रूप से साक्षी तो न बन सका, परन्तु जिस समय इसकी संकल्पना बन रही थी तब मैं दिल्ली में ही था अतः इसकी भव्यता का अनुमान लगा सकता हूँ। चौथे क्रम पर अनेक विषयों पर सुरुचि पूर्वक निर्मित की गयी अनेक नाटिकाओं का मंचन जो अलग विधा में प्रेरणा देने का नवीन माध्यम साबित हुआ।

अब मैं अंतिम बिन्दु के रूप में मंच से प्रस्तुत कार्यक्रमों की बात करूंगा। वस्तुतः यही किसी भी आयोजन का प्रमुख भाग है। यह सफल तथा प्रेरक है, सशक्त है , तो सारा तामझाम सार्थक है और यहाँ अगर कोई कमी है तो सब व्यर्थ माना जाता है। अतः सभाधिकारियों ने सर्वाधिक ध्यान व समय सम्मेलनों तथा इनके विषयों के निर्धारण में लगाया। सशक्त मंच की बात करें तो इतना सशक्त मंच कम ही देखने में आता होगा। महामहिम राष्ट्रपति समारोह का उद्घाटन करें और भारत के गृहमंत्री समापन, तीन-तीन मुख्यमंत्री, अनेक केन्द्रीय मंत्री, दिल्ली राज्य के उपमुख्यमंत्री, चार-चार महामहिम राज्यपाल, अनेक आर्य श्रेष्ठि जिस समारोह को सुशोभित करें साथ में अनेक सांसद भी और इसके साथ आर्य जगत के ख्यातिनाम विद्वान तथा भजनोपदेशकों की उपस्थिति निश्चित रूप से मंच की गरिमा में अभिवृद्धि कर रही थी। सम्मेलनों, विषयों तथा वक्ताओं का चयन काफी सतर्कता के साथ किया गया। राजनेताओं के वक्तव्य आश्चर्यजनक रूप से प्रभावशाली तथा महर्षि-महिमा के प्रतिपादक थे। श्रोताओं की अपार भीड़ वक्ताओं को उत्साहित कर रही थी।

विश्व भर से ऐसा कौन संन्यासी, विद्वान वक्ता, भजनोपदेशक, आर्य श्रेष्ठि अथवा आर्य सभाओं का अधिकारी था जो सम्मलेन में उपस्थित न था अतः विषयों का प्रतिपादन श्रेष्ठतम रूप में हुआ। हां एक बात मेरे विचार में अवश्य हुई कि राजनेताओं के समय में और वैदिक विद्वानों के लिए नियत समय में उचित संतुलन नहीं हो पाया। यह मजबूरी रही हो सकती है पर मेरा मानना है कि वैदिक विद्वानों की योग्यता के अनुरूप उन्हें पूरा समय नहीं मिल पाया जोकि अत्यंत आवश्यक था। यही स्थिति भजनोपदेशकों के साथ भी रही। मुझे लगा कुछ विद्वानों को यह स्थिति अप्रिय भी लगी। खैर इतने बड़े सम्मलेन में मंच पर उपस्थित आमंत्रित अति विशिष्ट वक्ताओं को अधिक समय लेने पर, न टोक सकने का स्वाभाविक संकोच, इसका कारण हो सकता है। कुल मिलाकर भविष्य में इस ओर अधिक सावधानी सम्मेलनों में चार चाँद लगा देगी।

एक अंतिम बात। छोटे से छोटे काम के लिए भी धन की आवश्यकता होती है। माना कि सभाओं से आर्यजनों से, आर्य श्रेष्ठियों से धन अपेक्षित होता है और मिलता भी है पर इतने बड़े समारोह की कल्पना भी अधिकारी तब तक नहीं कर सकते जब तक को ऐसी हस्ती का आशीर्वाद पूर्व में ही आपको प्राप्त न हो। वर्तमान में यह सौभाग्य आर्य जगत के भामाशाह, महर्षि दयानंद के प्रति अनन्य भक्ति रखने वाले पूज्य महाशय धर्मपाल जी के आशीर्वाद के रूप में हमें प्राप्त है जो साहस व शक्ति देता है ऐसे आयोजनों की संरचना की।

सार्वदेशिक सभा, दिल्ली सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली व अनेक प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों की कई महीनों की मेहनत आखिर रंग लायी। जितने आर्य संगठनों व उनके अनगिनत कार्यकर्त्ताओं ने सर्वात्मना अपने को इस समारोह की सफलता हेतु झोंक दिया उनके नाम उल्लिखित करना संभव नहीं है। पूज्य महाशय धर्मपाल जी के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेशचन्द जी आर्य, मंत्री प्रकाश जी आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान धर्मपाल जी आर्य, महामंत्री विनय आर्य जी को समस्त आर्य जगत की ओर से उनके पुरुषार्थ को नमन करते हुए साधुवाद।

– ***अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष, श्रीमद्दयानंद सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर***

Veda Prarthana - II : Regveda - 21/2

I Resolve to Prevent Bad Thoughts Coming to My Mind

परोपेहि मनस्पाप किमशंस्तानि शंससि।
परेहि न त्वां कामये वृक्षां वनानि संचर
गृहेषु गोषु मे मनः।।
अथर्ववेद 6/45/1

Paropehi manaspapa
kimashamstani shamsasi.
Parehi na tvam kamaye
vraksham vanani samchar
graheshu goshu me manah.
(Atharva Veda 6:45:1)

- Acharya Gyaneshwarya

Religious texts of all major religions in the world state and teach us that we should refrain from sin or evil. What is sin or evil and why should we refrain from them? According to the Vedas sins are those karmas/deeds which are not worth performing because in the short and/or long term they hurt both the doer and also others.

All thoughtful human beings by their innate nature desire prosperity, success and happiness in their lives. To accomplish these goals successfully, most persons think of a variety of methods, some of which are virtuous, honest and honorable while others are bad, sinful, dishonest and non honorable. Many persons often have thoughts that on some occasins lying, deception, cheating, stealing, bribery, injustice, favoritism, or other types of wrong conduct are all okay and acceptable to succeed. Some persons have less of these wrongful thoughts and others more so. On other occasions, same persons have thoughts that virtuous conduct in life is always the right and honorable method and one should refrain from wrong conduct under all circumstances. This mental struggle/quarrel between right and wrong conduct often goes on people's minds with suppoting and refuting arguments on both sides.

when an average person thinks of doing a bad, dishonest or sinful deed, in his/her mind the following types of wrongly supportive arguments emerge. What is the harm if I also cheat because in the society around me and all over the world there is rampant corruption and dis honesty? This is the era of Kaliyuga (era when sin will often prevail over virtue) and without bad or sinful methods one cannot succeed in life. I am dshonest and sinful in only a very small amount whereas others are way more sinful. I will do this sinful deed only this one time, and in the future will completely refrain from sinful deeds. As a result of this small financial cheating no particular individual will be hurt. The wealth I gain by cheating is not for my individual benefit alone but would also benefit my family, relatives and friends. I will donate part of the money (though ill-gained) to charity to help the less fortunate in the society, town and nation. Thus, I will be able to help and benefit so many persons and nobody would even know or be hurt by my ill-earned money. Such are the arguments in a person's mind and thoughts to justify doing a wrong deed. if the person has a weak integrity and the mind is not resolute (because of past bad sanskars), even while knowing in his/her heart and mind that the deed he/she is about to perform is wrong and sinful, yet due to greed, temporary financial gain and apparent prosperity, the person goes ahead with the deed.

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत वाक्य अभ्यासः (72)

वर्तमानकालिक शतृ व शानच् प्रत्यय

गतांक से आगे....

(लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे) वर्तमान काल को कहने में धातु से शतृ व शानच् प्रत्यय होते हैं । शतृ का अत् व शानच् का आन शेष रहता है।

शतृ-प्रत्ययान्त शब्द के रुप पुल्लिङ्ग में पठत् के तुल्य, स्त्रीलिङ्ग में नदी व नपुंसक लिङ्ग में जगत् के तुल्य रूप चलेंगे।

वहीं शानच् प्रत्ययान्त शब्दों में पुल्लिङ्ग में राम,स्त्रीलिङ्ग में रमा व नपुंसक में गृह के तुल्य रूप चलेंगे।

उदाहरण- 1) सः विद्यालयं गच्छन् भविष्यति। यहां गच्छन् क्रिया ''जा रहा अर्थ'' अर्थात् जाना क्रिया की वर्तमानता का बोध कराती है व ''जा रहा होगा'' इस अर्थ को प्रकट करने के लिए साथ में भविष्यति (लृट् लकार) का प्रयोग किया है। इसी प्रकार भूतकालिक वर्तमानता को दिखाने के लिए ''लङ् लकार'' व वर्तमानकालिक वर्तमानता को दिखाने के लिए ''लट् लकार'' का प्रयोग होगा।

2) पुष्पाणि पतन्ति सन्ति।	फूल गिर रहे हैं।
3) बालकः पठन् आसीत्।	बालक पढ रहा था।
4) रमा भोजनं खादन्ती अस्ति।	रमा भोजन खा रही है।
5) अहं त्वां पश्यन् अस्मि।	मैं तुमको देख रहा हूं।
6) भगिनी भोजनं पचमाना अस्ति।	बहन भोजन पका रही है।
7) दासी धनं याचमाना आसीत्।	दासी धन मांग रही थी।
8) सः फलानि नयमानः भविष्यति।	वह फल ले जा रहा होगा ।
9) हरिः अत्र शयानः अस्ति।	हरि यहां सो रहा है।
10) तत् पत्रं पतमानम् अस्ति।	वह पत्ता गिर रहा है।

- *क्रमशः*

***आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय,* मो. 9899875130**

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज खजूरी खास, दिल्ली

प्रधान	:	श्री अंगद सिंह आर्य
मंत्री	:	श्री लालता प्रसाद शर्मा
कोषाध्यक्ष	:	श्री रामपाल सिंह चौहान

आर्य समाज बारां (राज.)

प्रधान	:	श्री दिनेश व्यास
मंत्री	:	श्री नेमीचंद नागर
कोषाध्यक्ष	:	श्री राम दयाल नागर

शोक समाचार

श्री विजय गुलाटी जी को मातृशोक

आर्यसमाज सी-3 जनकपुरी के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री विजय गुलाटी जी की पूज्या माताजी श्रीमती ज्ञानदेवी जी का दिनांक 3 दिसम्बर को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री अनिल तनेजा जी की सासू मां भी थीं। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 6 दिसम्बर को आर्यसमाज सी-3 जनकपुरी में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों सहित दिल्ली की अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री बी. एच. चौधरी दिवंगत

आर्य समाज पश्चिम विहार के संस्थापक, संरक्षक एवं पूर्व प्रधान श्री बी.एन. चौधरी जी की 97 वर्ष का आयु में दिनांक 27 नवम्बर 2018 को बिना किसी बीमारी के अचानक निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 30 नवम्बर को आर्य समाज पश्चिम विहार में सम्पन्न जिसमें में विभिन्न समाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किये।

श्रीमती असरो देवी जी का निधन

आर्य समाज बी.एन. पूर्वी शालीमार बाग, नई दिल्ली के धर्माचार्य एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कर्मचारी श्री प्रद्युम्न शास्त्री जी की पूज्य ताई श्रीमती असरो देवी जी का 91 वर्ष की आयु में 14 नवम्बर 2018 को निधन हो गया।

श्री प्रवीण भाटिया जी को मातृशोक

दयानन्द पब्लिक स्कूल विवेक विहार के चेयरमैन/प्रबन्धक श्री प्रवीण भाटिया जी की पूज्य माताजी श्री पुष्पा भाटिया जी (धर्मपत्नी स्व. श्री विश्वम्भरनाथ भाटिया) का 30 नवम्बर को 83 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा सोमवार 3 दिसम्बर को दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी सहित निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 3 दिसम्बर, 2018 से रविवार 9 दिसम्बर, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 6-7 दिसम्बर, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 5 दिसम्बर, 2018

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-28 अक्तूबर, 2018

हम सबको स्वामी दयानन्द सरस्वती के चरित्र से शिक्षा लेकर आगे बढ़ना होगा - योगगुरु स्वामी रामदेव जी

महासम्मेलन में पधारें योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज ने मंच को सुशोभित करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि देश में गुरु-शिष्य की परम्परा प्राचीन रही है। यदि पुनर्जागरण काल के बाद के इतिहास को देखें तो स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हम सबके गुरु हैं। हम सभी को स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के चरित्र से शिक्षा लेकर आगे बढ़ना होगा।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विचार ही हमें पुन: विश्व गुरु बना सकते हैं

- नितिन गडकरी, केन्द्रीय परिवहन मंत्री

अपनी गरिमामयी उपस्थिति से मंच को संबोधित करते हुए केन्द्रीय परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने जो विचार हमें दिया है वही विचार हमें विश्व गुरु बना सकता है। उन्होंने परिवहन मंत्रालय की ओर किये जा रहे विकास कार्यों से भी उपस्थित जनसमुदाय को अवगत कराया।

आर्य समाज हनुमान रोड का 96वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का 96वां वार्षिकोत्सव दिनांक 14 से 18 नवम्बर के बीच सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी के ब्रह्मत्व में यजुर्वेदीय यज्ञ हुआ, ऋत्विक डॉ. कर्णदेव शास्त्री जी थे। कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 14 नवम्बर को आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ। 14 से 18 नवम्बर तक प्रात: कालीन बेला में गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियों द्वारा वेदपाठ सम्पन्न हुआ। सायंकालीन सत्र में श्रोताओं ने श्री अंकित उपाध्याय के कर्णप्रिय भजनों का आनन्द लिया, श्री वीरेन्द्र विक्रम जी ने विभिन्न विषयों पर अपने प्रवचन प्रस्तुत किये। इस अवसर पर 17 नवम्बर को रतन लाल सहदेव भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसका विषय था सामाजिक कुरीतियां मिटाने में आर्य समाज का योगदान जिसमें रघुमल आर्य सी. से. स्कूल राजा बाजार की छात्रा कु. नजमुश ने प्रथम कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल अशोक विहार की कु. राधिका नरूला ने द्वितीय व डी.ए.वी. पब्लिक सकूल रोहिणी सै.-7 की कु. अनुष्का गोयल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पूर्णाहुति के दिन श्रीमती श्रद्धा आर्य, आचार्य चन्द्र शेखर शर्मा एवं आचार्य वीरेन्द्र विक्रम द्वारा विभिन्न विषयों पर ओजस्वी भाषण प्रस्तुत किये। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- अरुण प्रकाश वर्मा, प्रधान

प्रतिष्ठा में,

खुशखबरी! खुशखबरी!! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2019 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह